Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
7
2017
VOL. 142

FOUNDER'S ESSAY

अपने को प्रेरित रखना

पुण्डरीक सूत्र के दसवें परिवर्त "धर्मभाणक" में शाक्यमुनि बुद्ध ने आश्वासन दिया है कि "यदि कोई पुण्डरीक सूत्र की मात्र एक गाथा या एक पद ही सुनता है और एक क्षण के लिए भी उसमें आनन्द में प्रतिक्रिया होती है, मैं उसके लिए सम्यक सम्बोधि सुनिश्चित करता हूँ।"

श्रद्धाविश्वास भी अजीब है। कोई बुद्ध का लघुतम अंश ही सीखता है परन्तु उसमें कृतज्ञता का भाव उत्पन्न होता है उसे एक के बाद एक फलदायी आशीर्वाद होंगे।

हालांकि, जो इस या उस बिंदु को लेकर टालमटोल करता है उस व्यक्ति को धर्मोपदेश से कोई पुण्य प्राप्त नहीं होगा, भले ही व्यक्ति ने देशना को संभवत: सविस्तार से कण्ठस्थ कर लिया है। यदि आप जानना चाहते हैं कि क्यों ऐसा होता है, क्योंकि जिन लोगों का बुद्ध की शिक्षा में रुचि एक विषय के रूप में है वे सीखकर भी गहरे प्रभावित नहीं होते हैं और यह निश्चित करता है किस रूप में आपकी उसमें पैठ है।

जो लोग धर्मदेशना के मात्र एक परिच्छेद से ही प्रेरित हैं वे उत्साहित होकर अभ्यास में स्वयं को समर्पित कर देते हैं और अपने आसपास के लोगों को उत्साहित करते हैं। उनके आसपास के प्रत्येक जन गुणों से पूर्ण और कृतज्ञता से ओतप्रोत है।

जब लोग धर्म का अध्ययन करते हैं, चाहे उनका खुल एवं सच्चा दिलदिमाग क्षणभर की प्रेरणा का अनुभव करता है या बौद्धिक विवेचना में संलग्न रहता है और धर्मदेशना के अभ्यास की अभेलना करता है, ये सभी संसार में फर्क लाते है।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), p. 56-57

Living the Lotus
Vol. 142 (July 2017)

Senior Editor: Shoko Mizutani
Copy Editor: Parmita Shekhar
Editorial Staff of RK International

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है । इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है ।

PRESIDENT'S GUIDANCE

दूसरों को पहचान देना और प्रशंसा करना

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

जीवन की प्रशंसा करना

हम प्राय: लोगों की प्रशंसा उनके असाधारण गुणों के कारण करते हैं। लेकिन हम कैसे असाधारण गुणों का आंकलन करते हैं ?

साधारणत: जब हम उनको असाधारण होने की पहचान देते और प्रशंसा करते हैं, हम उनकी विशेष सफलता की ओर इंगित करते है जैसेकि कि किसी कठिन परीक्षा में सफलता, काम में तेज होना, व्यक्तिगत विशेषताओं को प्रदर्शित करना, या किसी खेल में उत्कृष्ट होना।

फिर भी,शाक्यमुनि ने देवदत्त की प्रशंसा की जिसने उनकी जान लेने की कोशिश की थी, और उसे "अपना प्रिय मित्र" कहा। मानते हुए कि अंगुलीमाल एक खुनी हत्यारा है, जिससे लोग भय खाते थे, धार्मिक अनुशासन के माध्यम से आध्यात्मिक रूप से परिवर्तित हो सकता है, शाक्यमुनि ने उसे शिष्य के रूप में स्वीकार किया।

यद्यपि चीजों को देखने का शाक्यमुनि का दृष्टिकोण आज के सामाजिक मानदंडों से अलग था, ये विवरण लोगों को पहचान देने और प्रशंसा करने के संबन्ध महत्वपूर्ण दृष्टि देते हैं।

आमतौर पर, प्रशंसा करने का अर्थ "गंभीर रूप से प्रभावित होना और प्रशंसा को अभिव्यक्त करना है। "इस परिप्रेक्ष्य में किसी के लिए संभव नहीं लगता है कि वही प्रशंसा करे जिसने उसकी हत्या की कोशिश की है। दूसरी ओर, बुद्ध की धर्मदेशना की प्रशंसा करना बुद्धों एवं बोधिसत्वों के गुणों की प्रशंसा करना है। इस आलोक में शाक्यमुनि को उसकी प्रशंसा करने में हिचक नहीं हुई जिसने हत्या करने जैसी पाप कर्म किया, क्योंकि उन्होंने उसमें बुद्धों एवं बोधिसत्वों के गुणों की चमक का अहसास किया।

हम लोगों के मूल्यांकन और निर्णय में हम उनके कार्यो, वचन तथा चरित्र की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। फिर भी, यदि हम ऐसी सोच से ग्रस्त हैं, हममें बुद्ध-स्वभाव के महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य को भूलने की प्रवृति है, वही बात है जो बिना किसी शर्तों के बुद्ध-स्वभाव की प्रशंसा का हकदार है। हम बुद्ध की धर्मदेशना के शिष्य के लिए लोगों को पहचान देना और प्रशंसा करना वास्तव में लोगों के जीवन की प्रशंसा है, क्या नहीं ?

वास्तव में, यद्यपि हमने शायद ही कभी इस गहरे अर्थ का ध्यान किया है, फिर भी, उदाहरण के लिए, जब माता-पिता अपने बच्चों को देखते हैं, या जब सुपरवाइजर्स स्टाफ के सदस्यों का मूल्यांकन करता हैं या जब मित्र एक साथ मिलकर कुछ करते हैं, इस सिलसिले में हम हमेशा दूसरों के उत्कृष्ट गुणों को पहचानने का एक दृष्टिकोण को बनाए रखते हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम उसी जीवन के भागीदार हैं जिसमें बौद्धों और बोधिसत्व के गुण अन्तर्निहित है।

तकनीकी जानकारी या बोलने की प्रभावी कला की आवश्यकता नहीं है

प्रशंसा या गुणगान के विशेष तकनीकी जानकारी के संबन्ध हाल फिलहाल में बहुत कुछ कहा गया है। वास्तव में, जापान के कर्मियों और बाल-व्यवहार मैनुअल प्रशंसा के सकारात्मक प्रभाव से भरे हुए हैं। उनमें बहुतों ने जापान के एदो काल के भिक्षु जीउन(1718-1805) की एक उक्ति को प्रशंसा के सकारात्मक प्रभाव के पक्ष में अमृत वाणी के रूप में उद्धृत किया है : जबतक आप उन्हें नहीं दिखलाते हैं, क्या करना है, उन्हें सुनने दें, कैसे करना है उन्हें प्रयत्न करने दें, उनके प्रयास के लिए प्रशंसा करें, लोग तरक्की नहीं कर सकेंगे। फिर भी, इन शब्दों पर गहराई से गौर करें तो एक महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर आता है कि वे जो शिक्षा देते हैं और वे जो शिक्षा ग्रहण करते है दोनों साथ-साथ विकास करते हैं।

दूसरों की प्रशंसा करने से उनके प्रति आपका हृदय खुलता है। हमें कहा गया है कि दूसरों की प्रशंसा करना महत्वपूर्ण है लेकिन जो हठधर्मी हैं वे आमतौर पर प्रशंसा के कुछ शब्द भी नहीं बोल सकते हैं। दूसरों को पहचान देने और प्रशंसा करने की सच्ची भावना से दोनों पक्ष एक दूसरे के प्रति खुले रहेंगे और संबन्ध सौहार्दपूर्ण होगा। इस अर्थ में पहचान देना और प्रशंसा करना मात्र दूसरों के लिए नहीं है, जैसा कि इसे कहा जाता है, यह आत्मशुद्धि का एक अभ्यास है।

मुझे लगता है कि वह 1965 में होगा। जब मुझे पीठ की मुश्किल समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था, मैंने पहली बार उपवास किया। उपवास के आठ दिन पूरे होने पर मैंने उपवास करने के कक्ष में ही क्रमशः भोजन की मात्रा बढ़ा दिया और घर लौट आया। मैं स्नान करने लिए स्नानगृह में गया। वहाँ मेरे पिता, संस्थापक निवानो भी अचानक आ गये। उन्होंने कहा, "मुझे अपनी पीठ धोने दो।" जब उन्होंने बेटे के पीठ को धोने के क्रम में मनहूस किया कि शरीर का वजन बहुत अधिक घट गया है, तो उन्होंने कहा, प्रतीत होता है कि बिना किसी विशेष क्रिया के "आपके पीठ की त्वचा बहुत चिकनी हो गई है।"

पिता और पुत्र के लिए स्नान में एक समय साथ-साथ स्नान करना जापान में असामान्य नहीं है, लेकिन हमारे लिए यह एक दुर्लभ घटना थी। इस अनुभव से मेरे समझ में आया कि थोड़ी सी भी, दूसरों को पहचान देना और प्रशंसा करना कितना महत्वपूर्ण है। यह पता नहीं है कि कैसे या किन अच्छे शब्दों में बोले, लेकिन अंततः इसी निष्कर्ष पर आते हैं कि अपने और दूसरों के जीवन की पवित्रता का सम्मान करना है और अपने दिल से उम्मीद कर सकते हैं कि दूसरे व्यक्ति बढ़ें और विकास करते रहें।

From *Kosei*, July 2017

Childcare lifeline

मैं अपनी चौदह वर्षीया पुत्री के साथ क्या करूँ जो मेरी अवज्ञा एवं मेरा प्रतिरोध करती है?

प्रश्न: मेरी चौदह वर्षीया पुत्री जूनियर हाई स्कूल में दूसरे वर्ष में है। फिलहाल वह मेरी अवज्ञा करने लगी है। उसके पास अपना मोबाइल फोन है और हमेशा किसी न किसी को फोन या ईमेल करती रहती है। वह रात में घर लौट ने का निर्धारित समय को नहीं मानते है और ऐसा लगता है कि वह उन सारी चीजों की खरीददारी कर लेती है जिनका भुगतान अपने मिले खर्च के रकम से नहीं कर सकती है। उसका कमरा बिखरा बिखरा है, जब मैं शिकायत करती हूँ और सजा कर रखने कहती हूँ तो कहती है कि "आप बहुत उधम मचाती हैं!" जब मैं उसके साथ सख्ती करती हूँ वह विद्रोह करती है और दूर खींचती जाती है। मैं अपनी पुत्री के साथ क्या करूँ ताकि उसके साथ सामान्य संबन्ध बना रहे ?

उत्तर: जूनियर हाई स्कूल में आते आते बच्चे मातापिता से प्रायः मानसिक रूप से स्वतंत्र हो जाते हैं और वे नन्हें बच्चों की तरह व्यवहार मिलने पर नाखुश होते हैं। वे अपनी नजरिये से चीजों को देखना चाहते हैं। रीतिरिवाज, मातापिता का हस्तक्षेप तथा साथ ही साथ पैतृक प्रभुत्व के प्रति उनमें दृढ़ विकर्षण का भाव होता है। जितनी अधिक सख्ती से माता-पिता अपने बच्चों पर दबाव बनाते हैं, वे मन में माता-पिता से उतनी दूर होते जाते हैं, और कभी विपरीत दिशा में चले जाते हैं।

आपकी पुत्री अपने संकेतों पर रहने की इच्छा व्यक्त कर रही है। यह उसके वयस्क होने का पहला कदम है। कृपया उसके बढ़ते दिल दिमाग के मूल्य को पहचाने, उसके आध्यात्मिक परिवर्तन पर ध्यान दें और हमेशा शांति बनाए रखें। खास कर, आप क्यों नहीं मुड़कर देखती हैं और स्वयं के ऊपर विचार करती हैं। स्वयं से पूछें कि क्या आपने अपनी मान्यताओं को अपनी पुत्री के दैनिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर थोपने की कोशिश की है या नहीं, जैसेकि मोबाइल फोन के प्रयोग, घर लौटने के समय, मिले रकम की सोचकर खरीददारी, कमरे के रखरखाव, आदि ? इस बीच, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि आप एक माता के रूप में उसके वास्तविक मकसद, उसके मन में क्या चल रहा है, को ध्यान से सुनना चाहिए। स्नेह से कहें कि क्या चल रहा है ? यह तुम्हारे लायक नहीं है, है ना? कुछ गलत है क्या?", और आपको अपनी बेटी की भावनाओं के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए तथा उसकी अनुसूची, योजना या सोचने के तरीकों का सम्मान करना और स्वीकार करना चाहिए।

वेशक, आपको असहाय होकर पुत्री के हठ के आगे झुकना नहीं है, बल्कि आप समय की पाबन्दी, खर्च करने की उपयोगिता के संबन्ध अपनी राय अपना विचार रखें, जिससे कि आप दोनों एक दूसरे के सोचने के ढंग को समझ सकें, साथ ही आप उसके दिल दिमाग को पूर्ण रूप से समझे और स्वीकार करें। समझना से तात्पर्य मात्र एक ही दिशा में समान सोच के साथ चलना नहीं है बल्कि एक दूसरे के बीच के मतभेद को स्वीकारना और आदर करना है।

जब बच्चे जूनियर हाई स्कूल के छात्र हैं, मातापिता को चाहिए कि अपना मत निश्चित करें और एक दूसरे के मतभेदों को स्वीकार करने की स्थिति में आयें। साथ ही बच्चों पर सावधानी से निगरानी रखें और उनकी सहायता करें। जब उनकी समझदारी परिपक्व होगी, मातापिता और बच्चे एक दूसरे के साथ बातचीत करें, एक दूसरे के कदमों पर चलें।

आपकी पुत्री आपको कहती हैं कि "आप बहुत उधम मचाती हैं।" उसका शायद मतलब है कि आप प्रायः शिकायत करती और सिर खाती हैं। इसलिये आप शब्दो में मितव्ययी रहने का प्रयास करें और सहानुभूतिपूर्वक उससे जुड़े रहें। ये प्रयत्न निस्संदेह आपकी पुत्री तक पहुँचेगी। जब वह समझेगी कि माँ उसकी पहचान एक वयस्क युवती के रूप में करती है और उस पर विश्वास करती हैं। वह एक वयस्क युवती के रूप में बढ़ेगी और अन्य लोगों को एवं स्वयं को अमूल्य बनायेंगी।

Point

जूनियर हाई स्कूल के इस आयु के छात्र अपने आदर्श के प्रति सजग हो जाते है और अपने स्वाभिमान को हवा देने की कोशिश करते हैं और अपनी प्रबल इच्छा बनाये रखे हैं कि दूसरे लोग उसका समर्थन करेंगे। बच्चे अपनी भावनाओं को विभिन्न रूपों प्रकट करके वयस्क से अपील करते हैं कि वे उन्हें व्यक्तियों के रूप में पहचान दें। फलस्वरूप ये व्यक्त व्यवहार / क्रियाएँ कभी -कभी जुनियर उच्च विद्यालय के छात्रों द्वारा तथाकथित "समस्यामूलक व्यवहार या विद्रोह" की ओर का संकेत है। यह एक अनमोल अनमोल बिंदु है जिसे माता-पिता बच्चों द्वारा उनके मानसिक विकास के साक्ष्य के रूप में दिखाए गए विद्रोही व्यवहारों को गले लगायें, और गर्मजोशी बच्चों के साथ सहानुभूतिपूर्वक बातचीत करें।

(टोक्यो अनुसंधान संस्थान के परिवार शिक्षा द्वारा प्रदान उत्तर)

The Tokyo Research Institute for Family Education इस आधार पर काम करता है कि "यदि माता पिता बदल सकते हैं तो बच्चों में भी परिवर्तन आयेगा।"हम विभिन्न स्थानों में प्रेजेंकशन देते हैं और संबन्धित माता पिता को अपनी सलाह देते हैं।"
"Family education from their children" कार्यक्रम में हमारी मदद से अनेक हँसते खेलते परिवार निकल आये।

हमेशा हथेलियों को जोड़ने को ध्यान में रखो

आपकी पुत्री किशोरावस्था में प्रवेश कर मानसिक और शारीरिक दोनों ही रूप से अस्थिर लगती है। हालांकि, यह आपकी पुत्री को उल्लेखनीय रूप से बढ़ने और मानसिक रूप से सुदृढ़ होने का अवसर प्रदान करता।

ऐसी परिस्थिति में कैसे माता पिता अपने बच्चियों के ऊपर निगरानी रखें? प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो की ऐसी सलाह है:

यदि माता-पिता बुद्ध धर्म के प्रति सजग हैं, और हमेशा कृतज्ञ और आभारी अनुभव करते हैं, भले ही उनके बच्चे आघात पहुँचाने वाले कठोर तरीके से बोलते या व्यवहार करते हैं, वे इसे सौम्य शांत भाव से स्वीकार कर सकते हैं। ऐसे माता पिता आदर सम्मान में अपने हथेलियों को एक साथ जोड़ना (गश्शो) कभी नहीं भूलें। फिर, बच्चे को माता पिता की भावना का अनुभव कर उन पर अपनी निर्भरता का अहसास होगा और वे खुल सकेंगे तथा अपनी दिक्कतों को बतला सकेंगे। (*Ichijo bukkuretto: Tootoi inochi o hagukumu niwa* [One Vehicle booklet: Nurturing a precious life], p. 43, 5–9.)

जैसे जैसे आपकी की पुत्री बड़ी होगी, माँ के रूप में आप में भी परिपक्वता आयेगी । जब वह चौदहवें वर्ष में है, तब आप माँ के रूप में चौदहवें वर्ष में हैं। आप आपने पुत्री के पास प्रेम भाव के साथ क्यों नहीं रहती? एक अस्थिर दिमाग की पुत्री से निपटना पड़ रहा है और बुद्ध द्वारा प्रदत्त उसके अमूल्य जीवन का सम्मान करते हुए उसके साथ संवाद से कुछ सीख सकती हैं ?

(धर्म शिक्षा और मानव संसाधन विकास विभाग, रिश्शो कोसेइ काइ द्वारा संपादकीय पर्यवेक्षण)

Please give us your comments!

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus.

living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Director's Column

बुद्ध को स्वयं में और दूसरों में नमन करना

4 जून को, श्रीलंका के सबसे बड़े शहर कोलंबो के एक उपनगर में रिश्शो कोसेइ काइ के नए धर्म केंद्र का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। यह श्री लंका में रिश्शो कोसेइ-काइ के पुजारी श्री योशीआकी यामामोतो के एकमात्र प्रयास और उन सभी श्रीलंका के सदस्यों के परिश्रम के फलस्वरूप नया केंद्र, थेरवादी बौद्ध देश श्रीलंका में खुला है, जिसमें शाश्वत बुद्ध की मूर्ति स्थाई हुई है।

पुजारी के रूप में 2010 ई0 में पदस्थ होने समय से ही श्री यामामोतो ने श्रीलंका के सदस्यों के साथ स्वयं में तथा दूसरों में बुद्ध को नमन पूजार्चना के अभ्यास में भागीदारी की है। श्रीलंका के सदस्यों का प्रारंभ से बुद्ध के प्रति अपार श्रद्धा सम्मान है, "बुद्ध" से अभिप्राय परमप्रतिष्ठ सर्वोच्च भगवान शाक्यमुनि बुद्ध हैं। इसलिए आरंभ में उनके लिए यह विश्वास करना बहुत कठिन था कि उनके अन्दर परमप्रतिष्ठ बुद्ध अवस्थित हैं। फिर भी श्री यामामोतो ने गत आठ वर्ष से उनके साथ धर्मदेशना और अभ्यास में भागीदारी द्वारा उन्हें विश्वास करने में समर्थ किया कि बुद्ध उनमें एवं अन्य सदस्यों के अन्दर अवस्थित हैं और स्वभावत: ही बुद्ध के प्रति आदरसम्मान प्रकट करें।

नये धर्म केंद्र के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मैं श्रीलंका के सदस्यों द्वारा बुद्ध-स्वभाव को स्वयं में और दूसरों में देखने की ओर झुकाव में रूचि तथा धर्मोपदेश के अभ्यास में आनंन्दोल्लास से प्लावित देख प्रभावित हुआ।

शोको मिजुतानी
रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय बिभाग निर्देशक

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers 2017

Rissho Kosei-kai International

3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927
e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654
e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls
1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204, U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419, U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung
No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,
Taichung City 401, Taiwan
Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 *Fax:* 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia
Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris
86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

International Buddhist Congregation (IBC)
3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai